

DPN 5606

Title: हरिश्चन्द्र कथा / HARISĀNDRA KATHĀ

Run. No. 6297

Cat. No.

Micro. No.

Subject *एपिक महाकाव्य*

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 18 x 6

Folios 28 Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

टिप्पणी: Remark २९ (माथ्यामा) अर्को २९: (किष्किन्धा कथा)
It is a portion of Episode of the Rāmāyana
Kiśkindhā Kāṇḍa

centimeter

5

10

15

20

15

10

5

0

centimeter

5

10

15

20



15

10

On

0

centimeter 5

10

15

20

[illegible]

वन्द्यो महावल। आगताय अवादीति रुन्मा न्याय नन्दन॥ गधनी लान
 ल॥ एवञ्जु नय मदा वन॥ मय्यो ध्याति वा योति कर्षा द्वा वि मम
 केय॥ अका दल मदाय म॥ गता राम वना रुज। सा गतस्य
 गत नय मरुद नि॥ म॥ दिग्म म अगत कृत्वा ॥ यून ॥
 यथ विगदि नि। विस्तीर्ण वल मदा। सुविष्णु ॥ यदयं नित॥
 सुयका निरु नक नवपू ॥ यथो यलो गिता। अष्ट वृक्ष वम वदि अ

प्रम अगि लो गिता॥ नाम नरु ठ ता ॥ का न वरु कृत् कर्म निरु गत
 नगा लजा ग वधी याम रुचि न रुज। दिनि निरु॥ यून मान ड वाव॥
 नवा प्रम यद द न अ नका म यून नि। यथ म दा वृषि नाम को
 ला रुद य नन्दन॥ किन या न अगत धवा दृष्ट न व क दा वत ॥
 वरु ला क वृ वि का ता न स य म दा वृषि गता प्रम यद न मयः य वि
 यो यता म न म ग दृ वा व द न नाम अष्ट वृक्ष वम वदि॥ अष्ट वृक्ष

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्ण उवाच ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे भिक्षुं आसीनम् ॥ आत्मसंन्यासं प्रवक्ष्यामि ते ॥
 अर्जुन ॥ अहं कुरुक्षेत्रे भिक्षुं आसीनम् ॥ आत्मसंन्यासं प्रवक्ष्यामि ते ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे भिक्षुं आसीनम् ॥ आत्मसंन्यासं प्रवक्ष्यामि ते ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे भिक्षुं आसीनम् ॥ आत्मसंन्यासं प्रवक्ष्यामि ते ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे भिक्षुं आसीनम् ॥ आत्मसंन्यासं प्रवक्ष्यामि ते ॥

गच्छेत्पुण्यं गच्छेत्पुण्यं गच्छेत्पुण्यं ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 किं कुरुष्वः शूरा नृपते नृपते नृपते ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

सोषीवसीगासंवांसिस्वदी ॥ साहगादेवया। गन रावलेनइवाभिता। मृगहंस
 मयंकुत्वासूराहंगनवाकगा ॥ वरहालाहृपीत्वावदलमुहताचिका। नउ
 सीगाविहोनम्यमूहकमपि जाविशु ॥ नमस्वभमदिवागाननिहा
 वृत्तिवृत्त ॥ ४ ॥ गीता ॥ कापि सु कफासूकृष्टगदसयथा
 ॥ नाहृत्वासाकेनवासगीजानीगायितामृता ॥ ५ ॥ व ॥ वनहादू ॥ ४ ॥ वसम
 दुसयि ॥ ४ ॥ वयन ॥ यूककृता ॥ ४ ॥ गाननयतादृष्टयितावने। वननद

तितरायिदिवाकिंमनयति ॥ यूकमवदिककोथीरनथस्यात्रिवन
 ॥ ३ ॥ नममृगीदृष्टीवदिकनृगकदिनमय ॥ ३ ॥ यहास्यामिमवीनायुयिद्या
 यधनद्वी ॥ ४ ॥ निर्यगोष्टीवदिक ॥ ४ ॥ कन्यकरायननयति ॥ किंकर्मम
 ॥ ३ ॥ यहाकागपूर्वकिंमकागमया ॥ ३ ॥ यनदू ॥ ४ ॥ यमिदम्याका कदककाक
 यमन ॥ ४ ॥ यगाकावाव ॥ ४ ॥ यनूयसम्यवका ॥ ३ ॥ निनामयवदितम्वय। कर्कन
 वदियाय ॥ ४ ॥ नकार्यी कदावन ॥ ४ ॥ यहायाननदू ॥ ४ ॥ यदू ॥ ४ ॥ यहायाननदू

॥ ॐ नमः शिवाय ॥ सुखदुःखसन्तानां च कवेः शिवाय ॥ नामि कथं कृतं दावाद्या
 शिवकान्त्यादिना ॥ ४ ॥ यमनक वृत्त प्राका कस्य कान्त्यादिना ॥ देवनसक्ति
 नामक ४ यमन यथानिदिगि ॥ यमनस्य यमन वृत्तं कान्त्यादिना ॥ ५ ॥ देव
 यात्मनो वाचिनेनादित्यकि ॥ नास्तु नमस्तस्मै व विष्णवे च मङ्गला
 मकनू यथा ॥ ६ ॥ यमनस्य
 व कालेन नमस्तस्मै व विष्णवे च मङ्गला ॥ विष्णवे च मङ्गला

मङ्गलार्चनं नमस्तस्मै व विष्णवे च मङ्गला ॥ ७ ॥ यमनस्य
 यमनस्य ४ वृत्तं यमनस्य ४ वृत्तं यमनस्य ४ वृत्तं यमनस्य ४ वृत्तं
 मङ्गलार्चनं नमस्तस्मै व विष्णवे च मङ्गला ॥ ८ ॥ यमनस्य
 नास्तु नमस्तस्मै व विष्णवे च मङ्गला ॥ ९ ॥ यमनस्य
 यमनस्य ४ वृत्तं यमनस्य ४ वृत्तं यमनस्य ४ वृत्तं यमनस्य ४ वृत्तं
 मङ्गलार्चनं नमस्तस्मै व विष्णवे च मङ्गला ॥ १० ॥ यमनस्य
 नास्तु नमस्तस्मै व विष्णवे च मङ्गला ॥ ११ ॥ यमनस्य
 यमनस्य ४ वृत्तं यमनस्य ४ वृत्तं यमनस्य ४ वृत्तं यमनस्य ४ वृत्तं

श्री

म
 जयमगमकाशयनननकादिबुदितनिकुनिकिभिवप्रगयति॥
 सम्यक्वतनकाककुकुआयुवाविदावगतु॥ प्रकृतिनयकथाकिजगाध
 मसुताजय॥ सुथातेति मथनेसामःसथनगतलम॥ सथनव
 वनेम॥ ४॥ सथनवनगी कृता॥ सथनवरुनवायुःसथनकलि
 गतनाः॥ सथनगिकृताकास्यथुपधायनप्रज॥ सथनमौर्यनसथ
 नलथनप्रसः॥ सथनवेनमात्रासि सथनवनमानि॥ सथननगनी

किंकिगनननननदिगुगिरात्मासुदियद्वनमथप्रवक्तुकानयन॥ द
 निवद्वगिदिकानात्रेवगिधामिद॥ ४॥ वृषमाणीयेथिद्योयामसम
 दोयनि॥ ननककमिदम्यो केमयतीसुनविकेय॥ पुनानविनमथ
 नेयुनप्राकयथयिमन॥ निभावेव॥ यदिदकथितकोगेविद्वेस्य
 धामिक॥ ४॥ ननकककथत्याककथथगिगुक्त॥ ननद्वेष्टागुदिकानि
 कुदिकुदिमदानवा॥ ननकुदानगावायमनसेयुननवतीन॥ जूगकाव

वे॥ १॥ पूर्ववेदिना नाम पूर्ववृत्तकथा दुर्गं निष्पन्नं दृष्ट्वा स्थापय विष्णु
 यनागनेस॥ यद्युच्यते जाद्विवागाथ के दानसु दुर्गनाम दृष्ट्वा जाद्वि
 नादवागयाया निष्पन्नं वावागयादुपयुच्य सर्वगीर्थादि
 शी ॥ २॥ यद्युच्यते सन्निहया या नाद्विष्णु दिवोक्तं यद्युच्यते ॥ ३॥
 नैवस्य नित्यं कृत्वा जन नरुलं वायुं प्रवाह निष्पन्नं कथानिदं ॥ ४॥
 दुर्मिहं नैव कृत्वा कथं प्रयत्नं ॥ ५॥ दृष्ट्वा स्थापय विष्णु

मथान॥ मथानां विष्णुं निष्पन्नं कथानिदं ॥ ६॥ उभयाकानसु कथानिदं सर्वत्र
 लोकि ॥ ७॥ दृष्ट्वा स्थापय विष्णुं कथानिदं ॥ ८॥ मथानां विष्णुं कथानिदं
 नानम॥ वायुं कथानिदं ॥ ९॥ नृपानं नृपानिदं ॥ १०॥ मथानां विष्णुं कथानिदं
 निवि कथानिदं ॥ ११॥ नृपानं नृपानिदं ॥ १२॥ मथानां विष्णुं कथानिदं
 । सर्वत्र मथानां कथानिदं ॥ १३॥ कथानिदं विष्णुं कथानिदं ॥ १४॥
 नृपानं । खानयानव नृपानिदं ॥ १५॥ मथानां विष्णुं कथानिदं ॥ १६॥

निविदिवानिद। सर्वजानिबलन्द हासर्वजानियल्य क्रया ॥ रुविग्यन्दस्यध
 मलिसहसोवयुतावन ॥ नकस्थिदुक्तिगोतगद ॥ खितानेवदृग्धन ॥
 गयसकृत्कृतादीनानव ॥ द्वाविप्रयीतिना ॥ वल्लिवर्षसहसुति
 सर्वजीवनिमानवा ॥ क ॥ ममजयनमृत्पुनाल्यनृत्पुनविद्याति
 ॥ गायन्तिर्बुवणंदकासुन्द ॥ वल्लुगमतिनो ॥ गायन्तीनिहिनानि
 ॥ तस्यवमानन्दरुविता ॥ मरुवद्वावातावीनेवस्वासा ॥ अयूगका ॥ पिनासा

द्विध

गायनल्येव पूजनामेयनकविन ॥ नधवी नस्यवि न्द्रायानेकमानदविदुता
 ॥ स्वकर्मधर्मसंलुक्ता सर्ववर्णु नितियस ॥ स्वाहा स्वधाययानिर्यषकस
 शिरन ॥ सदा ॥ अग्निहा ॥ नवसाध्यापीनृत्पुननयानका ॥ यरु
 गजुष्वसधानिअग्निहा ॥ वरुने ॥ एवमृत्पुनसंलुक्ता जयेश्वर ॥ वा
 यल ॥ अग्निगृहत्रुट्टागिमृदनाकिवनवपि ॥ कसवसुधनादिद्यानथमव्य
 दयदकिता ॥ सन्नायामगदकानात्रुट्टाकिक्कवन ॥ अग्निहा ॥ वसाध्याव

॥ ॐ । प्रसी ददवना ॐ नु कथय स्रमदा गय ॥ गव वाव ॥ हविष्य नु स्र ग
 जान सायिसलै मरुवर्ग ॥ रं नु लै सम्यये कृ निते नो हं ल्यक सगने ॥ गगदव
 समस्त नवका एकथिनम्य नः । विद्युत्तस्य युक्त्वा मिनस्य अत्सज
 ॥ नामर्न ॥ वक्ता ॥ प्रसद लेक क न्दवशा जलियम्यूनः । विद्युत्तवैः
 नितस्येव विष्यमिण मरुमूनि ॥ यु विगता नयदा गज विष्यमिण सकाग
 गः । येन नूक गग वक्ता नावदस्य स्वयम्वदन् ॥ गन्दवैवर्न गृ लो वक्ता

यदतिनायकः ॥ गकृत्वा यूरु विष्यमिण सकाग गः ॥ गव स्र नु हिताथ
 यज्ज्वा ल्नात स्युदीयन । गथो हं हविष्य नु स्र विद्युत्तवैवर्नान्यथ ॥
 गकृत्वा रं नु सदाद गत्रा उदी नु विग म्भत । गज ग मयदवम्या
 विष्यमिण स्र ग्महर्न ॥ गनेवता नदी दृष्टा ड किष्ठ मनिमम
 ख ॥ अद्य योदयू स्रम्या ड यो दयू स्रम्या ड मूय विष्ठा स्रम्या गन ॥ विष्यमि
 शावाव ॥ अद्य म स्रम्या ड म ॥ अद्य म स्रम्या ड म ॥ विष्ठा म स्रम्या ड म

सिद्धिर्गण्डास्य जानता ॥ दवानां द्विजवाक्च न नयायि कृतया विवा ॥ जगत्सु वा
 च ॥ एही दृष्टा च चर्न ॥ चानानयायि दिवज्जगता ॥ सश्रितयगिदिकृत दिव्ये सि
 शोमहासुनि ॥ वाजायनसंधे ॥ मरुस्यवत्ता दयायन ॥ नास्ति हि दुर्ग
 मस्यैव जगत्सु वा किं निर्य ॥ स ॥ द न कासम ॥ गनस्य जगत्सु वा
 किं न दित ॥ त्वं कृत्वा तु गनैव सम विन साय नूयिर्न ॥ गल्लगा दगसा वि देवा
 रानलरुषिर्न ॥ कर्तुं संपूट कृत्वा य लिप्यत्यम दी नयन ॥ साय द द वाच ॥
 कथं विष्टक नाम्ना ॥ नाम निव नृ ल ध्यान स्तिवा तर्मा किर्न ॥ किं द ग कृत्वा गस्येव ॥

नगस्य दृष्ट्यग कापिष्ट ग नृ कृत म प्रयु ॥ वृद्ध गमस्ति यथा यिम दृष्ट
 सुदा नृ लम ॥ कृत्वा क म दृष्टी सा यि क यिर्न न कृत्वा वन म ॥ ग न कृत वत स द
 चिदयो विवि धी निव क दली ॥ माते नी व व कृत की ण ग य रि का ॥ युष्ट
 क दानि कृ दानि दृष्टा य धी वि ॥ विक्षे निव ॥ जगत्सु क यन म ॥ कृत्वा क दली व
 क न वी न के ॥ वस्य का म र्मि का ॥ छेव ना ग क ग न के म ॥ ना न ॥ म गृह म ॥
 जूसा क दा ठि मा द य ॥ जू य न्या यि म म क्ता नि गृ क न गे दि दानि ग ॥ य ॥ म ॥
 नाल २

[illegible]

वगनया । कालं वा यदयि न गच्छति । न मित्रा न सुदुष्ट ॥ अगच्छति वा न ।
 उवन् । कायं नाना अद्वा कस्यार्थे वन्दे । न च मे वध्वमाने ह्युपुक्तिर्येन
 दुर्गया । सनायनिसमाद भजना नमस्य नादया । मृगमना कदाचनं न
 धुर्मदस्य मायुष्य ॥ नन्दन । स्वामिना देवा गृह्यजानी वादया गजा ॥
 कृदमी कश्च नाम्ना धानं नृदान विविधुषां ॥ अयं वसमाने धने ॥ कृताणि
 यानि नाज्यया कश्च विद्या लोधान न दा वि किं न ॥ यनि धानं निगू न व्यक्त

नस्व दुनि भद्रं नः । नवसामि स मा द गं सर्वसं द्य टिग म्बलम् ॥ ह्रस्ववर्णु ह्रस्व
 ह्रस्व न ल न न व दू विना ॥ सुपा न ज व क थ व न न य व न य म् ॥ व स न न व दू
 सी न ज उ व वि दू सु वा स न । य ज मा न पि स ग द व लि न म्ब व नि ग
 ह ॥ स म्ब का ल वि न सु ग द दू ध्या न वि ध सि नः । व नु दि न स मा व दू स क ॥ १५
 धा मि द स व वी न ॥ ह नि न्ध दू वा व ॥ अ द मि द स मा न म कं वि द्या नि ग व न
 वि धी नि गं य न द न द्या य म्ब क न ग ॥ अ ए वा य स म धी वी नू क थ कि न य
 कृता कृ २

य नि । क्व व क न व श्या या दू ४ द्या व क कृ गृ ह य न ॥ अ न का वा व । ए न कृ वा नू क
 म क ४ न उ दू ग म क ग य ॥ स व स को ध मा या क गृ दि वा दि दू सी यू क ४
 ॥ ल मा क कृ म क न ल स म्ब द क ल क न न व ॥ स को वा स म्ब वा दू
 गृ क न मी य कृ यि न स ॥ न मी य थ म व नि क का थ न क दू क दि
 न व दि ता । न कृ कृ ध म क वी न ॥ वि द्या सु नि या गि ता ॥ अ व न क म्ब
 सु ग उ दू स र प म क । नू न ल या न पि वा नू ग र्ज यि ता सु द नू न स

थिगकस्य क... नम दीसद ॥ गथा कु द नव के के ॥ कथा रन अनि
व । व द ग व द निव द ॥ य ती स स ग न व ॥ क मी स न्य ट क क वा ज न स ॥ दि
म दि ज । द नि ष्य द व व ॥ त्वा म नि वि स्म य म न स ॥ वि कि ग न्य
न ॥ य ष्य कि स य म ग ॥ अ द ग म ॥ म नि नू वा द ॥ य य व क
थि ग न ज न ग न्य व म मि व दि न ॥ रु म ग न ग न य व ज न्य वे द स म भू न ॥
ह नि ष्य द वा द ॥ रु म ग न स ग वि द्र ष्य म म म ॥ कि म य न ॥ ग म्मा द व ॥

य न ॥ कु य नि का ला द द स्य र् ॥ वाना न स्या मि नि र्न त्वा वि द्र पि वा व य
न क ॥ त द ना स द य ग न द त द ॥ मि न के व म ॥ म नि नू वा द ॥ वाना ग स
मि नि र्न त्वा द य दि न द य मि ॥ ग ग कि वि ष्य द क ग द नि ष्य द व द
स म ॥ ह नि ष्य द वा द ॥ रु म ॥ ग व ग न य न वे द स्या मि अ द क व
या द न न व द ज नि न पि वा मि क क क थ ॥ अ न वा द ॥ व र्द ष्य द व
न व ष्य न स्या र्द स या थि व ॥ ग दि ज स दि ग क स्य क न का ॥ थि वि नि र्न त्वा ॥
व त्त

॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ विष्णुं ध्याम्य जीयन्त्येव समा यद्वाचं लिङ्गात् तद्
 वाचं यि ॥ न कदाचिन्मम हृदये नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा
 ॥ मिश्रं न विनिर्गच्छति ॥ यन्मम स्मृत्यतिनीका मिश्रं विद्वाका शम्भुनेक
 दा ॥ मन्त्रिन्वाच ॥ तस्य दयादिदवाय नाकुन ॥ मन्त्रिन्वाच ॥ तस्य दयादिदवाय नाकुन ॥
 यन्मम हृदये नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा ॥ नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा
 मिश्रं वाचं नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा ॥ नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा

गङ्गा नदी सर्वान्मनुजान् सर्वान्मनुजान् सर्वान्मनुजान् सर्वान्मनुजान् ॥ कदाचिन्मम
 वाचं ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ विष्णुं ध्याम्य जीयन्त्येव समा यद्वाचं लिङ्गात् तद्
 वाचं यि ॥ न कदाचिन्मम हृदये नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा
 ॥ मिश्रं न विनिर्गच्छति ॥ यन्मम स्मृत्यतिनीका मिश्रं विद्वाका शम्भुनेक
 दा ॥ मन्त्रिन्वाच ॥ तस्य दयादिदवाय नाकुन ॥ मन्त्रिन्वाच ॥ तस्य दयादिदवाय नाकुन ॥
 यन्मम हृदये नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा ॥ नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा
 मिश्रं वाचं नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा ॥ नान्द्रा सुखा नान्द्रा सुखा

दिज्ञानाविद्यावस्तुनानाविधविद्या। सगन्धानि विदितानि विदितानि विदितानि
 विविधानि च ॥ सन्नादया मिगलुलमन्वानयानय (धियिग) ॥ कउस विविध
 सो ॥ नत्तासदय (धियिग) ॥ त्रैलोक्यनाजयूरेथे कउसव विच कल ॥ २३
 नन विविधनायूरी गिद्धत श्रमे मगुद ॥ नीगदा दु नियमसग कियन
 यथा ॥ **अगसावाव** ॥ ॐ दं श्रवागगावा श्रमे दनादा रि ॥ सदा ॥ अथका नवा
 वासंयुक्त नवनमनमा ॥ धुगणिका यथा वं दिका धेन मियन वंवी गदकु नि
 कौ २

दूनावा नीयाय कर्मसुव वा के ॥ कसदा नयूकायू कन ॥ नव सुव
 क्रमानाया डिक्कानय गिगागव ॥ दावनजाना सिधे श्रमे कणु मिक सि ॥ यणिक
 नत्रजाना सिधमसुद नदग ॥ **कदयुवाव** ॥ ॐ दं दूनावावा विमग
 नन्ममिनि र श्रयिकागनाव ॥ **श्रीसगीव दूकु मिक सि** ॥ मयनाडवाव ॥
 नसयकु मडाना नगवाकम गिवना ॥ अगगल्ल ॥ मगणनयकु ना सिक्कुया
 अगसावाव ॥ ॐ यवके ॥ धर्मावाव गल्ल ॥ दागगा कयि ॥ वीमा न सयना क
 दि २

कर्तुं नाथ विकर्तुं ॥ गंगासोता निगागमा दानवा वयल म्युन ॥ कदनी नाथ
 सानाथा यूननैव गुरुक्षणा ॥ गंगासध्या कवला या मभिममा डिगु लि म ॥ अदि
 ॥ मरु मय ॥ यशवर्क्य नाय ॥ ॥ गामु द्वा वदया न द्वा वदु मिथ्याय
 श्री नेवृणा ॥ गमाया मा ऊ ॥ ॥ क वा आ गमा गुरु म नूरव ॥ ग न व ग रु सा न
 न द्वा ग म धु निनी किर्त ॥ म न नी स रु य ग न स म्यु गु सि र्व ल य न ॥ स म्यु व फा
 ॥ ॥ म म्दु दि द्वा ग न व वि किर्त ॥ नो र य गी उ ला न य य स्य काल वि य र्क या न ॥

गथा क अ भिस म्म ग कि म्म ल म्म य रि पी ॥ ग द्वा क क व या वि य म्म ल्म व द्वा मि नी
 गृ ॥ ॥ द नि य द्वा वा च ॥ वे दि द्वा न म्म व र्क्य दी य न व व न कि या म ॥ स दि ना द्वा
 कु मा ल ग य दि वा म्म रु मि रु सि ॥ अ भिस म्म वा च ॥ धु व गी द्वा म्म र्क्य दी य न
 म्म व र्क्य दी य न म्म र्क्य दी य न ॥ अ भिस म्म वा च ॥ ग म्म व र्क्य दी य न म्म र्क्य दी य न ॥ म
 न ना ड वा च ॥ य दि मे गुरु स ग न का अ न क रु मि रु सि ॥ ग कि द्वा म्म व नि य
 मि न ग स य रु म व द ॥ अ भिस म्म वा च ॥ म म्म य गी म्म न ना ना क स य त्वा व द

कृतं त्वमिच्छां न लाया मन्त्रिच्छा क निवृत्तिमि ॥ इति मन्त्रं यथा द्वादि च व
 यासम ॥ अथ ग्रावन्न विना मित्रं क्वचानी वम ॥ अथ गोवाच ॥ एतद्गुणवि
 श्री कृणादवा विप्रं कश्चिन्म ॥ सदनानां दिनासंख्यं गृहीत्वा स गृहं भित्ति ॥ २४
 कृणादवा विप्रं कश्चिन्म ॥ इति मन्त्रं यथा द्वादि च व
 नासिना नमः ॥ एतद्गुणविप्रं कश्चिन्म ॥ इति मन्त्रं यथा द्वादि च व
 कृणादवा विप्रं कश्चिन्म ॥ इति मन्त्रं यथा द्वादि च व

श्रीगोनीलाम्बवधवाच ॥ दलुरुसंनदीगठ ॥ लूननविधिना साविनिर्णय
 यवायली ॥ वक्रं कजा क्वीगीयं कर्म केवा निदा नू ॥ सदनानां दिनासंख्यं गृहीत्वा स गृहं भित्ति ॥ २४
 लर्मम्य सन्दिप ॥ निष्ठु वम ॥ एतद्गुणविप्रं कश्चिन्म ॥ इति मन्त्रं यथा द्वादि च व
 लुर्नयोषण ॥ केव विन्धे न च ॥ यथं यनं ॥ एतद्गुणविप्रं कश्चिन्म ॥ इति मन्त्रं यथा द्वादि च व
 इकर्म विणवत ॥ नय निनय सयू का दिवा नाणे वप्र क्वेति ॥ क्षायन गुरुया
 दानि मनसा कर्मण मिता ॥ अस्मिन्म प्रणु कस्य सर्वसंन्याय दिति ॥ ये कि

वरुवा निष्ठा नवर किय नायन ॥ अनय निवर्ग निर्य निवृत्त नक्षमिध निव । व
 क्तमय नाव वना दिगा ससुगणु ॥ मय नाव वाच ॥ कीर्ति ॥ सी वरु मूल नरान
 का पुन वरिणि ॥ गेमा सिधु समत कु गम्य न व व न गुग ॥ उर्य दिनय
 श्री सज्जक निवर्ग समिध नय । ययु ययु या ययु निर्य म वा गु वा नय ॥ नादिगा स
 उवाच ॥ सत्य म क व या अन्व अरु द्रुवा मिनी दृगम् । निर्य ग्य सदिगा निर्य वा द्रु या द्य
 मिनिर्य स ॥ अन्व का वाच ॥ गगा यराग व नाय निर्य स द वि निर्म नम् । वज्र न्द्वे न

याव द्द्विभु क क व ॥ नन्दु म्मा वद न लिधे रि द क व न (निरुक्त) नि
 व निर्य सुदो गा (न) राज युग निधो मि वि ॥ काम ल म्म क मा ना लि ने वा (न)
 चर (न) का री । क व न्द व व स म्या का क थ क्क क्क स व न । पथ य थ
 धि क क्क क्क क्क या नि व य म्म न ॥ निर्य क द्दि गा थ य मा र्ज य सि
 व्द्वे न ॥ म्म या न्य यु कि ना न न म्म व्द्वे या नि निर्य स ॥ पुन व न्द्वे दि न व्द्वे
 म निध (ध) वि निर्म न ॥ पथि व व न म्म (ध) स मिध व व व द्दि गा ॥ गगा पुन

मरुमाणा नाशरस विष्णु कर्म ॥ एक नो कुरु मादिना सुगन्धमर्दिन कुरु ॥ एवं सो वास्य
 दुर्माणा कथं दद्यात्तु नयनं ॥ यस्य दवा मवसु लिन तारु नु नु विना ॥ एवं सो वा
 स्य दुर्माणा जीर्ण कुरु नु निरुक्ति ॥ यस्य दममया दसो कुरु नाम निमलुना ॥
 श्री एवं सो वास्य दुर्माणा कथं नु नु यीषे नम ॥ यस्य नाव कुरु निरु नु नु नु नु नु
 विरु नु नु ॥ उ क कुरु कथं कथं एवं सो वा मिना न ॥ किना सुखा स न व द न न न वि
 सु विना ॥ एवं सो वास्य दुर्माणा सुखा स न न विरु नु नु ॥ एवं स न न निरु नु नु नु नु
 दे २

वायु न ४ दू न ४ गग मृदु वसं प्राप्ता अथ कथं यमिना सु वि ॥ नादमा ना ग्यु नु निरु नु नु नु
 निरु नु नु ॥ मय ना ना निरु नु नु वी कुरु मा ना य ध निरु ॥ दसु निरु नु नु नु नु नु नु
 गया ॥ ना निरु नु नु कथं नु नु वा किन ॥ ये ना ना ना नु ॥ गं नु नु वा ना ना ना ॥ एवं नु नु नु नु
 न नु कथं नु ॥ दसु अथ स स स ॥ न काल न व द नु नु नु ॥ मृग निरु नु नु नु नु
 दमा यमिना सु वि ॥ नादमा ना निरु नु क नु नु नु नु नु ॥ दसु नु नु नु नु नु नु
 मृ नु नु नु नु ॥ दसु नील म द्या द नु नु व का विव नु नु ॥ दसु नु नु नु नु नु नु
 व ३

धियता विना द्यालवर्त्तनयुग्मममकृत्ता नन॥ जनात्थादन्वययुग्मनिनासा
 द्यहयकुता। मदादृष्टेवनिदुस्साकृत्ता संनयान्यदृष्ट॥ सतिगुरुदेवामयुग्मा
 कनमहिना। नूदकिकानूनादि नान्ययुग्मनिना विना॥ नहिनासकृत्तनव
 श्री दृष्टमयुग्मवगदता। तावुगता मातकिद्वयस्यसिमुतानन॥ नूदकीना २२
 कसकफावावादिमहासति। उदितगम्यगीयुग्मजुमिममयमदिनेन॥ यधि
 मायागतातानुजुवलावतविक्रमि॥ जूनकावाव॥ नकुकाकानूनालायक
 मं२

निष्ठद्वयविनिर्गमः ॥ ६४ ॥ शिवताकातदीना न वृद्धकमृदययुक्ता ॥ शानिकायागुन
 (आयिवस्त्राथविसमागता ॥ गणः यस्य निःसार्यना कितसश्च निवृत्ति ॥ इक्षुमृद्युव
 मया ककूणसर्वगुणविर्ग ॥ स विषादकितासायिजुष्टयूष्टुलुलवनते ॥
 ननकुवायनकात ॥ अयसकि वयाप्रिय ॥ दूरीर्लुदेवसंयोगवानर्क्ष
 नयनर्क्ष ॥ ६४ ॥ यूष्टुकर्मरुल ॥ अमृथाउजाननिष्ठय ॥ देवमन्त्रादुगमायां नादि
 सम्यवादिता ॥ सन्नाधनयनाववग्नावातोयितनायक ॥ वरुमृद्युनगनवावा

श्री

मिनस्यस्यिगमः॥ नूयनिसदना ववज्जगतास्व गृहमूनः॥ दृष्ट्वा सांख्यसिद्धिं समुत्त
 विषादम्वदः॥ कर्णः॥ नवयिक्ता विनत्रममयनास्वा सिनायूनः॥ गता गता दसा दनन
 मायामिह न गता॥ गतवत दि नवा नः॥ मूयितं नाडमदिनः॥ वोलं प्रलंघ
 नाना सुसर्वनद्या प्रवर्णिता॥ सुव पुनत नूया निरुनाम कौवली गथा क्रिफ ३०
 जलकिगा ववत गता वा वसुधनी॥ विलेन नः॥ निनगस्या दनम कौसुः॥ गतरन
 मः॥ गता यित्व निनगता विदूषम्या विदम्युलदः॥ नमया दवसा ववत यल
 नवदृष्टवत ना वि चनिता गुरु सैम्वर्वा॥ तस्य गी वस्तिना दान ववत ननिना क्रिती॥

5

उक्तं च वतं गुरु स्य कृतं वा दानमस्य॥ १॥ ध्याय्य समानीता कालमनस्यया ॥ २॥
 निधी॥ अगता वा व॥ गदुत्वा॥ नपिग कृद्वा जावचनमेववी॥ नाशो वा व॥ गदुत्वा
 प्रमुदी वा काल सनेत्यया ॥ ३॥ निग्रहं क्रियतां तस्य यथा बोधा दि वा कृता॥ ज
 गता वा व॥ येन नूया निसमा दनन न क्षयिता नोद नूयिर्ग उक्तं काल सनेन
 गृहीत्वा वृजगा यवा ॥ ४॥ नमनी नति सुतयुगवदुसना मरुवल ॥ गता यिनया
 गवयुसना सका गता॥ मयना स्वय निदृष्ट्वा विनयित्वा प्रदुर्विना॥ धन्या दृष्टव्यं
 आनिजमरुतं विदुति॥ मृगारुमु दुर्लभं नयास्या मित्रमा मतिम्॥ जन्मजन्मा
 यः ॥

10

श्री

कनकगर्भाद्विष्णुद्वान्विष्णुः ॥ उक्तं च वदुस्तननकिंकिंवननयाकृत् ॥ यूननूक
कनकगर्भाद्विष्णुद्वान्विष्णुः ॥ गङ्गावन्दनायागदसोयद्वनूपिमे ॥ अष्टद्वन्द्व
व्यामिषयमिषयमालय ॥ नवमूकान्विष्णुद्वान्विष्णुः ॥ अष्टद्वन्द्व
सङ्गद्वन्द्वकनकगर्भाद्विष्णुः ॥ नवमूकान्विष्णुद्वान्विष्णुः ॥ अष्टद्वन्द्व
नीलान्विष्णुद्वान्विष्णुः ॥ नवमूकान्विष्णुद्वान्विष्णुः ॥ अष्टद्वन्द्व
नवमूकान्विष्णुद्वान्विष्णुः ॥ नवमूकान्विष्णुद्वान्विष्णुः ॥ अष्टद्वन्द्व



न।
रुनिष्ठावाच ॥ अहं या या दूना वा नासु ह्येह म्यायका निर्व निव वद वा वा सि ज्ञात्ता नि वसा
यितं ॥ विज्जीता सुगयती वज्र या यक्ष मेया कृर्ग ॥ न व द्म यज्ञा व न ना शिता सामृगा सुग ॥
अनका वाच ॥ न न द्धु वा दु ध मे नि ना शिता सा य य वि नि उ क्ता वा स मे या व द्धु
सो क व व न कृर्ग ॥ ये मे वा वा अ इ व काल म न स्य कृ न मू ल्य म या न व ॥ अ वि
ग म्मा दि जा व द्मा शिता य द्धु व द्धु यि न ॥ द व न सु त म स सु को रू ल य ना य ॥ अ
दा यित ॥ वि द्धु ना र्थ वि द्धु मि श म ह्मा नि ॥ अ न न द्धु य ॥ न न व स य वि नि कित त्

15

10

5

0

Centimeter

5

10

15

20

रम्या ३

कस्माद्युयमहासयः नानाकिमदसवया ॥ कृदिकुदिवन ॥ कुरुक्षये सर्वदेवता ॥
 नगदुवागतायार्थं कृनिपुन्यपराधिना ॥ कृनिपुन्यदावाय ॥ कुरुक्षये सर्वदेवता ॥
 मिनायदवत्वमवय ॥ १०० ॥ मिस्वपुना कुरुनिष्ठा निवामया ॥ युका
 सवसाकय निवृत्ता ॥ अजनाम नगदवकुन कि द्विववर्जिता ॥ अजनाम वय ॥
 नवमसुगयनूक वदमाथा सर्वदेवता ॥ नरुधनकुसम्याय कृनिपुन्यनना विप ॥
 अत्ररयूयक दिव्य विमानसु कृनामिका ॥ सवपतीसगनाधिगववकुनले ॥

३३

15

10

5

0

centimeter

5

10

15

20

